



विदेह

15 मार्च 2008

वर्ष 1 मास 3 अंक 6



श्रीति ठाकुर



एहि अंकमे अछि:-

15 मार्च 2008

वर्ष 1 मास 3 अंक 6

1. शोध लेख:

मायानन्द मिश्रक अतिहास रौध (आँगा)

2. उपन्यास

सहस्ररौढ़नि (आँगा)

3. महाकार्य महाभावत (आँगा)

4. कथा(प्लागरुड)



5. पद्य

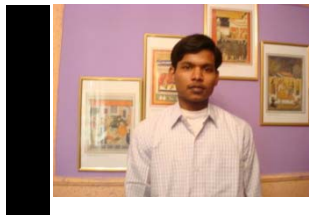


ज्याति या चौधवीक पद्य
गामक सृयसुति

खां खान करिक खगाय करिता

6. संस्कृत शिक्षा (खाँगा)

7. मिथिना कना- चित्रकना



चित्रकाव उंमेशि ह्माव महतो



8. संगीत शिक्षा

(खाँगा)

9. रानानां थते

(एकांकी -खपाना खात्रेयी- पहिन भाग)

10. पंजी प्रबंध

श्री रिद्यानन्द ना"मोहनजी" पंज्जीकाव





11. मिथिना खा' संस्कृत(सरतंत्रस्रतंत्र रँछा
नाक जीरनी)

12. भाषा खा' प्रीद्यागिकी

13. बचना निखरँसँ पहिने... (खाँगा)

14. प्ररामी मेथिन English मे

थ. VN Jha केब DO WE REALLY
EXI ST AS NATI ON

था.VI DEHA,M t hi l a,Ti r bhukt i ,
Ti r hut ...(खाँगा)



संपादकीय

रर्ष: 1 मास: 3

अंक: 6

एहि अंकमे साहिवकेँ बाजनीतिमँ जोड़य रँना अंग्रेजीमे रिरैकानन्द मा जीक नेख प्ररामी मेथिन सुंभक अंतअत देन गेन अछि । पङ्गीकावजीक पूर्ण पबिचयक संग हुनकर नेख सेहो देन गेन अछि । रिदेह द्वावा किछुँ प्वान अनन्त कितारक डिजिठनागजेशनक काँपोर्वा सेहो शुक कएन गेन अछि । पङ्गीक स्किंग आ' मर्च कवरौ योग्य डिकशरी जाहिमे पाठक नर-नर शिछ जोड़ि सकताह केव खाधाव किछ मनोयोगी रिदेह कार्यकर्ता सभक द्वाव शुक हेन अछि । अ सभठा सभ का निःशुक्ल



कए बहन छथि आ' अपन मातृभाषाक आ' मातृभूमिक अनुरागी होयराक प्रमाण दए बहन छथि । हिनका लोकनिक नाम बचना आ' आकर्षक सम्मुख अएना पब सौँना खानन जायत ।

अपनेक बचनाक आ' प्रतिप्रियाक प्रतीकामे ।

नग्न दिनी 15/03/08

गजेन्द्र ठाकुर

1. शोध लेख:

मायानन्द मिश्रक गतिहास रौध (आँगा)

श्री मायानन्द मिश्रक जन्म सहबसा जिनक रँलेनिया गाममे 17 अगस्त 1934 अ.के. भेलन्हि । मैथिलीमे एम.ए. कएनाक बाद किछ दिन अकाशवाणी पठनाक चोपान सँ संरक्षक बहनाह । तकरा बाद सहबसा कान्नेजमे मैथिलीक व्याख्याता आ' रिभागाध्यक्ष बहनाह । पहिले मायानन्द जी करिता निखनन्हि,पढाति जा कय हिनक प्रतिभा आलोचनामेक निरर्थ, उपवास आ' कथामे सेहो अकष्ट भेलन्हि । भाई नोटा, आंगि मोम आ' पाखब आ' चन्द्र-रिन्दु- हिनक कथा संग्रह सभ छन्हि । रिहारि पात पाखब , मंत्र-पत्र ,खोता आ' चिठे आ' सूर्यास्त हिनक उपवास सभ अछि ॥ दिशांतव हिनक करिता संग्रह अछि । एकव अतिविज मोने की लैया माँ के लोग, अथर्व शैव पुरी च.मंत्रपत्र, पुरोहित आ' मन्त्री-धन हिनक हिन्दीक प्रति अछि । मंत्रपत्र हिन्दी आ' मैथिली दू भाषामे प्रकाशित भेल आ' एकव मैथिली संस्करणक हेतु हिनका साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित कएन गेलन्हि । श्री मायानन्द मिश्र प्ररौध सम्मानसँ सेहो



পুবস্কৃত ছুথি। পহিলে মাযানন্দ জী কোমন পদারনীক বচনা করিত ছনাহ . পাছাঁ জা কয
প্রযোগরাদী করিতা সভ সেহো বচনছি।

হবকিসন ঋধ্যাক প্রাবম্ভ 3400 রর্ষ পূর্ হোগত ঋছি। গ্রষি
রিকাসক মং স্থায়ী নিরাসক প্রবৃতি রঁহয় নাগন। ঋ তকবা রাঁদ
পবিরাবক কপ স্পগ্ধ হোময নাগন। গ্রষি-রিকাসমঁ রাশিজ্য
রিস্তাবক ঋরগ্ধকতা রঁহন। ঙুনক রসত্র, চক্লী, ভীতক ঘব ঋ
গনাবক ঘেবারী রঁনয নাগন।

কিসন ঋধ্যাক প্রাবম্ভ 3300 ঙ.পূর্ ভেন। শ্রিম-রঁেচরাঁক প্রাবম্ভ
ভেন। পঠৌনীক প্রাবম্ভক মং গ্রষি-রিকাস গতি পকড়নক।
ভূগোন জানকাবী ভেনাসঁ রাশিজ্য রঁহন। ঋনঁকাবক প্রবৃতি
রঁহন।

হবস্পা:মোহনগাঁর ঋধ্যাক 3200 রর্ষ পূর্ দেখাওন গেন
ঋছি। শ্রিম-রঁেচরাঁক হেত্তু কাঠক ঠৈনক ঙদাহবণ ঋরঁেত ঋছি।
ঋনঁকাব প্রবৃতি রঁহন। গৌনীক মানাক মঁক হুম্হাবক চাক সেহো
সম্মুথ ঋযন। সমাজমে রস্খা রিভাজনক প্রাবম্ভ ভেন।

গণেষক শ্রীগণেষ ঋধ্যাক 3100 ঙ. পূর্ প্রাবম্ভ ভেন। দক্ষিণাঁচন
নোকক ঋাগমন রাঁদ হবস্পা হুনকা ক্লনিক দ্বাবা রঁনৈরাঁক চর্চ
নেখক করঁেত ছুথি। মোহনজোদড় 1, নোখন ঋ চান্দুদোড় ক



रिकास र्यापाविक केन्द्रक रूपमे भेन । निपि, कठली गारु ी था मूर्तिकनाक थारिस्काव भेन था रसु रनिमयक हेतु हाठ नागय नागन । मेसोपोठामियाक जनप्लारन था स्वमेरी था थस्वबक थागमनक चर्चा लेखक करैत छथि ।

किन्न थध्यायक प्राबन्त 3000 अ.पू. सँ भेन । रिदेशी र्यापावक थाबन्त भेन । तामक थारिस्काव भेन । प्रुषि दामरुक सेहो प्राबन्त भेन । रौहर्ति सँ स्वस्काक हेतु डूँच डीह रँनाउन जाय नागन ।

महाजन थध्याय 2800 पू. प्रार्भ्त होगत थछि । नगबक प्राबन्त राणिज्यक हेतु भेन । नहवि पठौनीक हेतु रँनाउन जाय नागन । डंडी तवाजूक थारिस्काव थारथकता स्वरूप भेन । प्रकाशिक रारस्थाक रौँत नागन ।

मंडन थध्यायमे चर्च 2600 अ.पू.क छैक । संस्था निर्मणि, रिराह रारस्था था दूबक यात्राक हेतु पान रँना नारक निर्मणि प्राबन्त भेन ।

किन्न मंडन थध्याय 2400 अ.पू. केव कानखल्दसँ थाबन्त कएन गेन थछि । एहिमे ररुषिक थभारक चर्चा थछि । थार्यक पूर दिशामे रँहुरौक चर्चासँ नोकमे भयक सेहो चर्चा थछि ।

मंडन:मंडनी थध्याय 2200 अ.पू.सँ प्राबन्त भेन । थार्यक थागमनक



थां रषर्क थलर दूनूकेँ देथेत नोखन रैकस्पर्क कपसँ रिकसित होमय नागन ।

पतनःपुर्वदरः एहि अध्यायक कानखल 2000 अ.पू.सँ प्राबन्धु भेन अछि । आर्यक बाजा द्वारा पुर्वकेँ तोड़ि महान केन्द्र हड़प्पाकेँ ध्वस्त कबरक चर्चिसँ मायानन्द जी अपन पहिन कितारै 'प्रथमं शीन पुत्री च' केव समापन करैत छथि । आर्य हड़प्पाकेँ हविष्युपियासँ संरोधित कएन, आर्य राहवसँ अयनाह प्रभृति किछु सिद्धांतक आधाव पव बचित अ उपायसँ ऐतिहासिक उपायसँ होयराक दारा करैत अछि । थां एहिमे 20,000 अ.पू.सँ 1800 अ.पू. तकक गतिहासोपाख्यानक चर्चा अछि । झुदा मौनिक ऐतिहासिक रिचावधावा थां नरीन शोधक आधाव पव एकव रहूतो रात समीचीन रूमना नहि जागत अछि ।

अग्लासँ शुक भेन अ कथानक रहु आशा दिखओने छन । नेखक पहिन अध्यायमे निथेत छथि जे पृथ्वीक उपेति नगलग 200 करोड़ रष पूर भेन जे सरथा समीचीन अछि । कर्मकालमे एक स्थान पव रर्णन अछि- “ ब्रौह्मणे द्वितीये पवार्धे श्री ह्यतरावाह कण्ठ रैरस्रत मन्त्रतरे अग्नारिंशतितमे कनिहगे प्रथम चवणे” थां एहि आधाव पव गणना कएना उतव 1,97,29,49,032 रष पृथ्वीक आह अरैत अछि । रेडियोएकिष्ठर रिधि द्वारा सेहो अएह उतव



खरैत खछि । ङा खनमानित खछि जे यूबेनियमक 1.67 भाग 10,00,00,000 र्षमे सीसामे रँदनि जागत खछि । रिभिन्न प्रकारक पाखब खा' चष्टानमे सीसक मात्रा भिन्न बहैत खछि । एहि प्रकारसँ गणना कएना पब ङा त्रात होगछ जे रेडियोएक्टिभ पदार्थ 1,50,00,00,000 र्ष पहिने रिद्यमान छन । एहि प्रकारेँ कोनो शैनक खाय 2,00,00,00,000 र्षसँ अधिक नहि भ' सकैछ ।

यूरोपमे सत्रहम शैली तक पृथ्वीक खाय 4000 र्ष मानन जागत बहन । ङवानक रिद्वान 1200 र्ष पहिने पृथ्वीक उपेति मनलैन्ह । ङा दू दृष्टिकोण रैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ हास्यास्पद खछि । एहि तबहक पाश्चात् शोधकेँ लेखक पहिन अध्यायमेतँ नकारि देनन्हि झदा खँत धरि जागत-जागत ओ' खाय नोकनि हड़प्पाकेँ हबियूपिया कहैत छथि एहि प्रकारक पाश्चात् द्वाग्रहक प्रभारमे खा'रि गेनाह । पश्चिमी रिद्वानक उँछिष्टु भोजसँ रँचि श्रुति पबस्रबक पबिष्का तर्क खा' श्रैफाक मिश्रणसँ नहि कए सकनाह । एहि प्रकारे 'प्रतमं शैन प्वती च' निम्न खाधाब पब खपन गतिहासोपाख्यान साहित्यिक रूपसँ नहि रँना पउनक.....

(खनरर्तते)



2. उपन्यास

सहस्ररौद्री (थाँगा)

गामक प्रागमवी स्कूनमे सभ कनाक परीक्षा होगत छन । संगीत, चित्र, नाटक । गाममे हाबमोनियम, दानक रँजेनहाब खूर बहथि । पहिने दुर्गा पूजाठामे नाटक होगत छन, झुदा पछाति जा' क' प्रशपाष्टमी, कानी पूजा गलादिमे सेहो नाटक खेनेनाग शुक भ' गेन । हबथाक वामनीना पार्टी सेहो एक महिना खेना क' गेन छन । थछमे दू चाबि दिनमे वामनीनाक रीचमे नाटक होगत छन । शुक भेन वामनीना पार्टी रिनारँजेनहि । झुदा दू चाबि दिन धबि माना क्य न' क्य उठरैत गेनाह । वामनीना पार्टीक सभ कनाकावकै एक दिनक खेनागक



खर्चकेँ माना उठेनाग कहन जागत छन । दूचाबि
दिनतँ मागक पब क्या न क्या जोशीमे जा' क' हम
माना उथायर तँ हम उठायर कहत गेनाह, झुदा दू
चाबि दिनुका रौद वामनीना पार्थीक खार्द खनुबोधकेँ
देखेत गौँका सभ ठेनक खनुसाब माना उठेरौक
एकठा फ्रम रँना देनखिन्ह । ओहि समयमे ओकब
एकठा चमकोब छन, खा' हम खपन कैबियब
खभिनैतोक रूपमे रौदमे कबरौक मोने-मोन गछा
बखेत छनहँ । ओहि समयमे शनि दिन स्कूनमे नाठक
खेनेरौक प्लान शिक्षकगणक स्त्रीप्रतिसँ रँनन । नाठकक
कितारँ कतएसँ खायत ताहि हेतु एकठा नाठक
दानरीब दधीची निखनहँ । स्कूनक कनाकाब सभकेँ
एकत्र कएनहँ । खारँ कनाकाब सभक नाम तँ सूनू ।
पोठहा, ब्रुहा, नैंगड़ १,
पोठसुइका, नेनहा, ढहीरँना, कनहा, खन्हवा,
तोतबाहा, रौँका, रँहिवा ङा सभ हमब रँनकनाकाब
बहथि । कावण जे खपनाकेँ शुभ्र-शौभ्र रँनुमथि से



कि एक नाटक खेनेताह । दहीकेँ तोतबाकेँ कहियो
क्या रही रजन तँ ओकर नाम रहीरना भ' गेनेक ।
सर्दीमे कहियो पोष्ठा चुरैत बहि गेनेकतँ पोष्ठा
भ' गेन खा' दोसब एहन भेन तँ दूनूमे खन्तब
कोना कबी । से ओ' पोष्ठा खसित कान स्वकतो
खुष्टि से ओकर नाम भ' गेन पोष्ठास्वका । खाँगा
खाँडु । ककरो खन्हबिया बातिमे ठेस नागि गेनेक
तँ कोन खततः भेनेक । हँ ओकर नाम खन्हवा भ'
गेनेक । रँचामे देवीसँ रँजनाग शुक कएने छनहुँ
तँ खहाँ भ' गेनहुँ रौका । सोमगब छी तँ
नेनहा । गपकेँ खनठरैत छी तँ भेनहुँ रहिवा ।
नर घड़ ी पहिबनाक रौद(घड़ ी पारनि दिन
रनस्पतिक घड़ ी) हाथ कनेक सोम बाधि नेनहुँ तँ
भेनहुँ बुन्हा । तोतबागत तँ सभ खुष्टि, झुदा
करियाठी ठेनक छी तँ लोक नाम बाधि देनक
तोतबाहा । कनेक डेरु भ' तकि देनहुँ खाकि
पिपनीकेँ उनठा क' ककरो डरेनहुँ त' भेनहुँ



कनहा । ठैस नगनाक रौद कनेक मका क' चननहूँ
तँ भेनहूँ नेंगर । ।

था' जौँ कनेक पाग रँनाक रैँठा छी, थाकि माय
कनेक दरँग छथि तँ कनाह बहनो उँतुव का कनहा
कहि क' देखओ ।

असु' एहि रौन कनाकाब सभक संग शनि दिन होयत
हमब नाँक दानरीब दधीची ।

(अन्नरतते)

3. महाकार्य महाभावत (थाँगा)

रौच यत्रमे उँठन छन अन्न अन्न-पूजाक ,
भीष्मक सम्मति हधिप्रिव पद्धनहि जा',
भीष्म कहन छथि श्रेष्ठ अन्न नृप रौच,
सहदेर स्वनि रचन चरण पथावय नाग ।

चेदिबाज शिषुपानसँ सहन नहि भेन,
अपशिद्ध अन्न-भीष्मकेँ देरँ नागन,



दूर्योधन-भ्राता प्रसन्न छन भेन,
भीमक क्रोध रूढन छन ओ,मपठन,
भीष्म बोकि शांति छन ओकवा कएन ।

शिशुपानक गावि स्वनियो छन प्रकृत प्रशांति,
छनाह किएकतँ ओ'पिसियोत प्रकृतक,
दिन रीतन प्रकृत देनथि रचन दीदीकेँ एक,
सय अपबाध म्फमा हम कवरँ ओकव ।

सय गावि स्वननाक उपवांत चनन स्वदर्शन,
चक्र कएनक चेदिबाजक शिरोहृद तखन,
सन्ना मध्य शांति - पसवन छन जाय,
शिशुपान पत्रकेँ चेदिक गद्दी पव रैसाय ।

यज्ञक क्रिया निरिह्न संपन्न छन भेन,
सन्त बाजाकेँ सममान रिदा कएन गेन ।



सभा भरनक चामकेलक भेन चर्चित,
दुयोधन-शेरुनि भरनकेँ देखन चकित ।
नौचा देखि मृग-मबीचिका रान्हन फाँट,
पानि नहि छन हसनि द्रौपदी ङा जानि,
अथना सौँना पावदवर्षी नहि ङा देखन,
उ' चोष्टिन भीमक अष्टहाससँ रिकन ।

आँगा स्फुटिक फर्श छन जकवा रूमन,
पानि भवन भीजन छन सभ हँसन ।

अपमानित छन नय ह्यधिष्ठिवसँ आत्ता,
चनन हसुनापुव शीघ्रहि सभ भ्राता ।
(अन्नरतते)

4. कथा

प्रागरुड



प्लागबुड

“नहि एहन कोनो रात नहि थछि”, आ तँ हमब सभक कार्यक अंतकात कबगए पड़त थछि” ।

“ झुदा थहाँकेँ आ नहि बुनि पड़त थछि जे एहि रैब किछु रैशी फुब भ गेनहुँ थहाँ सभ ? ”

“फुबताक तँ कोनो रात नहि थछि । हमबा सभ तँ कोनो रिशेष सूचनाक आधाब पब कार्य करैत छी” ।

“मानि निय’ जे हमबा ककरोसँ दुश्मनी थछि, आ’ ओहि आधाब पब रिभागकेँ ओ’ अपन राकितगत स्मार्थ आ’ नगड़ क हेतु प्रयोग कए सकैत थछि” ।

“ थहाँक शंका ककरो पब थछि ? ”

“ नहि हम तँ उदाहरण दय बहन छनहुँ” ।

“ नहि हमबा सभ कोनो सूचनाक आधाब पब सोमे रिदा नहि होगत छी । पहिने ओकब गर्रेषणा करैत छी, आ’ तकरे राँद एतेक ठाम सर्च कबराक अन्नमति भेटैत थछि” ।



“ झुदा खरिं खहाँ ङा कहियो देरिं जे खहाँक कोनो गनती नहि
खुछि, तँ की हमब गज्जत नौछि कए खायत” ।

” एनातँ हमबा सभकेँ हाथ-पब हाथ दए रैसि जाय पड़त ।
झुदा खुछुक गप ठीक खुछि । खहाँक प्रति जौँ दूषरणी कां कार्य
कएने होयत तँ ओकबा पब कार्यराही कएन जायत । ”

“ की कार्यराही होयत । हमबा पबतँ कार्यराही भ' गेन । हमब
सभठाँ राँयब धूँछि जायत । हम सभ एतेक पबान छी, तीन पसुसँ
एहि कार्यमे नागन छी । कबरौ कबर तँ बँडैसुठान विमूरन
कबर । सभ पबतँ बेड भ' गेन, किछु कतहु नहि भेँठन से
के पतियायत” ।

ओकब राँतो ठीक छुनेक । ङा प्लागवुडक र्यापाबी एक नरंबक
काजक हेतु जानन जागत छन, झुदा संकषणकेँ जे सूचना प्रापु
भेन छनहि से ओकब रिपवीत छन । झुदा ङा बेडतँ खानी
गेन । हैकठबी, घब, डीनब सभ ठामसँ ठीम खानी हाथ खायन ।
झुदा खरिं आँहिसबकेँ की जरारिं देताह । नामी कंपनी छन,
खुधिकाबीगण डवा क' बेडक खनुमति संकषणक र्याकितुगत प्रतिष्ठाक
देखैत देने छनाह । हेडक्वार्टबसँ फोन पब फोन संकषणकेँ
खरिं बहन छनहि, भोबतँ बेडमे भगये गेन छन, दस रँजे
आँहिसमे बिपोर्ष देरौक हेतु कहन गेन छनहि । हैकठबीक



मानिक सेहो एम्हब- ओम्हबक रात न' क' दस रात सुना देनाकन्हि । सुर्गप्लाग नाम्ना ङा कंपनीक दिन्नी धवि पहुँचि छनैक । थकछु भ' क' संकर्मण भोवमे घब पहुँचि मोराँगन आँफ क' कय 9 रँजेक थनार्म नगा' क' स्वतराँक प्रयास कबय नगनाह । कान्हि भोबेसँ बेड चनि बहन छन, ङा कोना भेन, कोनो बल्लडेसठाँगन विमूरनक कचा पर्छी किएक नहि भेठैन । केस नीकतँ नहि भ' गेन । झुदा केसक रिषयमे संकर्मणक थतिबिकतु डायरेक्टव रिजीनेंसकेँ मात्र रूमन छनन्हि । ङा सभ रिछौन पब सोचिते बहथि, तारत निन्द तँ नहि नगनन्हि झुदा 9 रँजेक थनार्म राजि उठन ।

आँफिसमे सभ का जेना हिनके राँठ ताकि बहन छनाह । कतेक गोठेँ ङाहो सुना देनकन्हि, जे एहि केसक गँठेनिजेँस हुनको सभक नग छनन्हि, झुदा एहि तबहक केसमे बल्लडेसठाँगन विमूरनकेँ सिद्ध केनाग झुशिकन होगत छैक, ताहि हेतु ओ' नोकनि एहिमे हाथ नहि देनन्हि । कानाहूसी होमय नागन जे रँडु हीरो रँनेत छनाह, थारँ थ्रुँसहब आँडव न' कय निकनताह डायरेक्टवक आँफिससँ ।



संकर्षण डायबेकठबक आँफिसमे गेनाह आ' सोने किछु दिनक समय माँगि नेनहिन । की प्लान छन्हि, एहि रिषयमे गप-शेप घुमा देनथि । एहि रैब कोनो प्रकारक कोनो भ्रम नहि बाख' चाहित छनाह ।

आरि संकर्षण स्वर्ण प्लागक फेकठबीस हठि क' आ' ओकब डीनबस हठि क' कार्य कबए नगनाह । सभठा दस्तारेजेकेँ घोथि गेनाह । किछु कागज पब सेहो निखय नगनाह । फेब अपन प्लानक हिमारसँ पठनासँ खबियाक हेतु रिदा भ' गेनाह ।

पान तँ खागत नहि बहथि आ' चाह सेहो घरे ठा मे पिरैत बहथि । झुदा लोकसँ किछु जनरक हो तँ रिना चाह आ' पानक दोकान गेने कोना काज चनत । से ओ' चाह पान शुक कएनहिन । राँरून दादाक गनकन्द रीना पान नीको रँडु नागहिन । तकवा राँद राँरून दादा खबियाक नग पासक सभठा प्लागबुडक फेकठबीक निष्ठ द' देनकहिन । झुदा फेकठ्री सभक पहुँचराक रोड सभक भगराने मानिक बहथि । धून-धक्कबमे कहना जा' कय एकठा फेकठबीक पता चनन जे स्वर्णप्लागकेँ सप्लाग दैत छन, ओतुक्का दवरान संकर्षणकेँ कहनकहिन जे मानिक दोसब फेकठबीमे रैसैत छथि, से दू ठा फेकठ्रीक पता चनि गेनहिन संकर्षणकेँ ।



संकर्षण थाकन-हावन ओहि खैकठवी पहुँचनाह । एक गोष्ठ मावराड्डे सज्जन रैसन बहथि ।

“कतयसँ थायन छी” ।

“थायन तँ पठनासँ छी, झुदा घुबरँ कोना से नहि रूमि पड़त छछि” ।

” हँ, एक गोष्ठ नेताक जेनसँ राहब गोनी मावि कय हवा क' देन गेन । नेताजी बहथि तँ जेनमे झुदा घुमय खिबय पूरियाँ जेनसँ राहब रिना नियमक निकनन बहथि । जेनब की कबताह । पिछना माम एक गोष्ठ कैदीकेँ पवनका जेनब घुमय हेतु नहि देने छनथिन्ह तँ भुष्टा रँजाबमे गोनी मावि देनकन्हि । एहि रँब जे घुमय देनथिन्ह तँ सबकाब सम्पान्ड क' देनकन्हि । ताहि हवाक राँद रँन्दक थाहान छछि । हमबा संगे बह्छ । एतय हमह्छ अपन गेसुठ हाँडसमे बहत छी । परिवार सिनीग्रुडिमे बहत छछि । विराह नहि भेन छछि । भोबमे हमबा कनकता जयरौक छछि । पहिने सिनिग्रवी अपन गाँडिसँ जायरँ तँ कठ रँदनि क' पूरियाँ रँस सँड्डमे खहाँकेँ छोरत जायरँ” ।

हरा रँजकब बहथि से संकर्षणकेँ नीक नगनन्हि । बातिमे गेसुठ हाँडसमे रँहूत गप्प भेनन्हि । नेताक बंगदावीक, चन्दा रँना सभ



जर्रदस्ती बसुद काष्टि जागत छनन्हि ।

“एनामे तँ रिना बन्नडेसुठागन कएने घाँठा भ’ जायत, हँ मजरुबी छैक । आ’ तकव दोषी तँ ग’ नेता मभ छथि । रापारी की कवओ” ।

आर्र मावराङ्गी हरा जकव नाम नरन छन कनेक कनछिया क’ संकषण दिशि देखनक । संकषणकेँ भेनन्हि जे ओकवा कोनो शंकातँ नहि भेनैक ।

“ नहि बन्नडेसुठागन नहि कवरौक तँ सिङ्गात अछि हमवा मभक । हँ किछ एडजेसुठमेँठ कवय पढ़त अछि” ।
संकषणकेँ यादि पडनन्हि जे कोना स्वर्ण प्लागक मानिको रँजेत-रँजेत रौजि देने छन, जे कवरौ कवर तँ बन्नडेसुठागन विमूरन कवर । तखन करैत की जागत अछि ग’ मभ । ओना अबवियाक ग’ हँकठवी स्वर्ण प्लागक हेतु जाँर रक करैत छन, आ’ ताहि हेतु सबकारी दूठक मभ भाव स्वर्ण प्लाग पव बहक । ग’ बन्नडेसुठागन कवियो क’ की कवत । ठैकर तँ दोसवाकेँ देरौक छैक ।



तखने एकठा फोन खयनेक । विंग नमगव बहक से संकर्षणकेँ
रूमरामे भांगठ नहि भेनन्हि जे आ राहबक एस.पी.डी.काँन
खुष्टि । ओहि काँनक राँद एकाएक ओ' हरा संकर्षण दिशि ताकि
कय चूपी नगा' गेन ।

भनमिया जकवा नरनजी ना सँ संरोधित क' बहन छुनाह खेनाग
रनि जेरौक सूचना देनकन्हि । संकर्षण आ' नरनक रीच मात्र
उपचारिक गप भेन । फेब दनु गोठे सूति गेनाह । भोबमे
खपन रचनक खनुसाव ओ' हरा संकर्षणकेँ पूर्षियाँ रम स्टुल्ल छोडि
देनकन्हि । उतबरौसँ पहिने संकर्षण नरनसँ पृच्छनन्हि । “
कनकतामे स्वर्ण प्लागक आँफिम छेक । ओतहि जा' बहन छी
की” ।

ओ' हरा हसन ।

“ खहाँ रिजिनेंस सँ छी । हमवा कान्हि जे एस.पी.डी. खायन छन,
से स्वर्ण-प्लागक कनकता आँफिम सँ खायन छन । खहाँक रिभागक
का गोठे हुनका सभकेँ खहाँक खबबिया यात्राक रिषयमे सूचना
देनखिन्ह । देखू हम कहने छी जे हम मात्र एडजेस्टमेंट करैत
छी । आ' ताहिसँ हमवा कौन फायदा होगत खुष्टि ? टैकू तँ
हमवा नगेत नहि खुष्टि । हँ ताहिसँ हमवा काज भेटैत खुष्टि ।
आ' राहबी छोठ-मोठ खर्चा, रिभागक, पुनिसक, नेताक निकनि



जागत खड्डि । तखन रेशी ।

अ कहि ओ' मज्जन संकषणकेँ हतप्रभ करैत चनि गेनाह ।

आरि पठना पहुँचि कय संकषण जखन आँफिस पहुँचनाह तँ मभकेँ
रूमन बहक जे संकषण ताहि फेकट्टीक रिजिठ सबकाबी खर्चा पब
कएनहि खड्डि, जकवा पब सबकाव टैक्लक माफी देने छैक ।

डायरेक्टर्स भेटै कएनाक बाद संकषण पहुँचि गेनाह कनकता ।
पुनिस थानामे घुमैत बहनाह आ' पता करैत बहनाह जे सर्प-
प्लाग आकि ओकब कोनो कर्मचाबीक रिक्छ कोनो केस छैक तँ
नहि । झदा ओतय तँ सर्प प्लाग रँडु नीक छरि रँनेने छन । आरि
संकषण मोचमे पडि गेनाह । जनप्रठ-आडठप्रठ केब खनुपातसँ
अ कंपनी करोड़ । कपयाक टैक्लक चोबि कए बहन खड्डि । झदा
प्रमाण कोनो नहि ।

संकषण ओतुक्का थाना मभमे अपन पता आ' फोन नंरब छोडि
देनहि, जे जेँ कोनो केस एहि कंपनी किंरा एकब कर्मचाबीक
संरंधमे होय तँ तकब सूचना हुनका देन जागन्ह ।



घुबि कए खाँरि गेनाह संकर्षण । डायबेकठबसँ कहनखिन्ह, जे
कनाजब विपोस्ट खखन नहि देरँ । देखेत छी किछु जानकावी
कतहूँ सँ भेटैत अछि कि नहि ।

छह मामक रौद ।

भोबमे एस.टी.डी. केब बिंग भेन ।

” हम कनकता, साल्ट नेक खाना सँ राजि बहन छी । एक गोठे
एकठा कमप्लन निखेने छथि, जे स्वर्ण-प्लाग आँफिमसँ पेमेन्ट न
क’ घुबैत कान हुनकब सृष्टकेस आँठे रँना छीनि नेनकहि, जाहिमे
किछु केशि खाँ चक छनहि” ।

” कतेक केस खाँ कतेक चक” ।

”1.79 नाख केस खाँ 1.83 नाखक चक, प्रायः केसक कोनो
गनग्रावेस बहनहि, ताहि द्वारे एफ.खा.ग.खा.ब. कबउनहि
अछि । चकक तँ पेमेन्ट स्ट्रॉप भ’ जायत” ।

भोरे रिना बिजरेशिनक संकर्षण पहुँचि गेनाह कनकता । खाँ
नोकन ठीमक संग ओहि गोठेक घब पब छापि माडनहि जकब
पाग खाँ केस आँठे रँना छीनि नेने छन ।

छापक रीचमे संकर्षणकेँ एकठा डायबी भेटनहि । तकवा रौद
पठना होन क’ खबबियाक फ्लैकठबीसँ नरीनतम विमूरनक विठर्न
मँगा नेनथि । हेब ओ’ सज्जन जिनका घब पब छापि पडन छन



केँ ट्राँजिष्ठ विमांड पव न' क' पठना थारि गेनाह । वस्तुमे पता चनन जे ओ' सज्जन नरनक रँहनोग छनाह, था' खबबियाक हेकठबीक एकाडन्ठेन्ठ होयरक संगहि, स्वर्ण-प्लागक संग ओकव नागजन थधिकारी सेहो छनाह ।

थारि सभ तथा सौँना छन । जे डायबी भेटेन छन ताहिमे केस था' चेकक काँनम रँनन छन । तिथि सहित रिरवण छन । चेकक भुगतानक काँनम खबबिया हेकठबीक कियबेस सँ मिन गेन छन, था' गहो सिह्र भ' गेन जे सभ ट्राँजेक्शनमे नगभग थदहाक पेमेँट स्वर्ण-प्लाग द्वावा केसमे देन जागत छन । था' तकव रिरवण नहि तँ स्वर्ण-प्लाग खातामे बहेत छन था' नहिये खबबियाक हेकठबीमे । स्वर्णप्लाग टैक्क सेहो मात्र चेकक (पकिया) द्वावा गेन थदहा विमूरनक पेमेँट पव दैत छन । संकर्षण ग्रा विपोर्स्ट डायबेकठव केँ द' देनहि ।

एकाडन्ठेन्ठक थपबाध रँनेरँन छनेक । कोर्स्ट ओकवा रँन पव छोडि देनकेक ।

"नरनक समाचाव कछ । रँडु नीक नोक थछि । झुदा किछ रँतेनक नहि" ।

" ओकव कान्हि खबबियासँ मिन्रीगुड ी जागत कान सडक दुर्घटनामे मून् भ' गेनेक किंरा कवा देन गेनेक । जमाय रारूक संग एतयसँ सोने हमवा सभ ओतहि जायर" । एक गोर्स्ट उँत्तजित



स्व जे एकाउन्टेन्ट राबू के नेरौक हेतु थायन छन राजि
उठन ।

“ झदा ङा रूमि निय’ जे खहाँक ङा सहनता हमब रूबरूकीसँ
भेठन अछि । जौँ हम केसक जनश्रारेंस बलमक नानचमे नहि
पढ़ि तहूँ तँ ङा सभ नहि होगत” । जमाय राबू राजि उठनाह ।
डायरेक्टव स्वर्णप्लागक रिक्छ कार्यवाहीक नेन कनकत्ता आँफिसकेँ
निधि देनहि । स्वर्ण प्लागक रिक्छ करोड़ एक ड्राइव्ट शौ-काँज
नोटिस सेहो पठा देन गेन । संकषन चिंतामग्न छनाह । “ ठीके
तँ कहनक नरन । एडजेस्टमेंटे तँ क’ बहन छन । चोबि तँ
क्या खान क’ बहन छन । ओ’ तँ मात्र माध्यम छन । हमछ तँ
कतहूँ नहि रनि गेन छी माध्यम, नरनक मूक” ।



5. पद्य



ज्याति न्ना चौधवीक पद्य

गामक सूर्यास्त

गामक_सूर्यास्त

एक खद्वुत दृष्य यादि पाइँ चकित भेनहुँ,

पोखविक तीड़ पव हम ठाँ छनहुँ

खाममानक नीनरणीं भेन वंगमय

दिया राँतीक झहूर्तमे सूर्य सरँसँ ° रिदा नय



स्मितीजमे रिनीन हूथ नागन
संग ओकव प्रकाशिर्पूज सेहो भागन
सरहक खविहानमे नानठेन ठिमठिमाय छन
पम्फा सर समदाउन गारि बहन छन
सेहो धुनि मन्द पडि गेन
साँ न वातिमे रदनि गेन
हेवि स खगिना भोव मे पम्फिगण
गायत प्राती सर मिनि एक संग ।



था' खान करिक खयाल करिता

होनी

धूबखेनक कादो-माठिसँ बहथि थकछ,
बंग खरीब भने थायन झदा नगौछ ठका,

साह-सुखड 1 रूमैत छनहुँ एकवा झदा,
निरंध निकनैत थछि बंगक केमिकनक,
रिषय थछि पवनके छन ठीक यो कका ।



दाक पिनहाव सोमवसक चर्चा करैत नहि अघागत छथि,
देरतो पिरैत बहथि ओकवा पवनका नामसँ, अछि होनी,
मित्रता रँहैरौसँ रँशी घटा बहन अछि आग कान्हि अ ।

6. संस्कृत शिक्षा

(आँगा)

सुभाषितम्

रज्रादपि कठोवाणि मृदुणि ह्रस्वादपि ।
नोकौतवाणाम् चेतसि को हि रिज्ञातुमर्हति ।

श्रुतस्य सुभाषितस्य अर्थः एरम् अस्ति । कदाचित महाप्रकषाणाम्
चेतसि(मनांसि) रज्रादपि कठोवाणि भवन्ति । ह्रस्वादपि मृदुणि
भवन्ति । अतः सुभाषितकावः रदति । कः महाप्रकषाणाम्
ज्ञातुम् शक्नोति । ज्ञातुमेव न शक्नुमः ।



कथा

चन्द्रगुप्तः गति एकः महाबाजः आसीत् । सः महाबाजः
मगधदेशे पानयति स्म । मगध देशेस्य बाजा आसीत् । तस्य
अमातः -चन्द्रगुप्तस्य अमातः -चाणक्यः गति । सः रहु रिद्वान्
निस्पृहः आचार्य आसीत् । यद्यपि सः महाबाजस्य अमात तथापि
सः सबन जीरनयापयति स्म । एकदा चन्द्रगुप्तः चाणक्यम् प्रजापुः
दातुम् करनम् यच्छति । सः चाणक्यः तस्य करनम् कृष्ठीरे
नयति । । सः सामान्य कृष्ठीरे रासं करोति । शीतकानः
आसीत् । सः कंपति स्म । एकः चोवः मित्रे संग आगतवान् ।
सः पश्चति । रूद्वनि धनानि संति । करनान् वाशिः अस्ति । पवंतु
चाणक्यः न धृतरान् । सः स्वपुत्रान् अस्ति । पनो अपि स्वपुत्रती
अस्ति । चाणक्य उठापेत् । चाणक्य द्वापेत् पृच्छति । भोः ।
किमर्थम् आगतवन्तुः । अनंतं सः चोवः रदति । शीतकानः
अस्ति । निद्रां करोति, करनान् वाशिः अस्ति । तथापि न
धृतरान् । चाणक्यः रदति । करनानां मदर्थं न दत्तरान् ।
प्रजापुः रितवणम् कर्तुम् दत्तरान् । अतः अहम् एतानि करनानि
न धवाम् । तदा चोवः चाणकां पृच्छति । भवान् कीदृशः
दयान्नः । निस्पृहः अस्ति । रयम् गतः पवम् चोवकार्यं न कर्मः ।
अतः भरतः सकाशिः रयं शिक्षितवन्तुः । ते चोवकार्यं एकत्रा
सङ्जनः भरन्ति । क्कमाम् याचन्ति । भरतः निस्पृहताम् दृष्ट्वा



अस्माकं नज्जा भरति । रयम् गतः पवं चौर्यं न हर्मः । गति
म्हमायाचन् ।

पद्य

नृति प्पुतनिका ग्रामे,
रानः पशुति अरैवामे ।
रिहसति, गायति, रोदति सा

यदा सा जीरति राना ।
सा अस्ति मनोहवा राना,
अहं गच्छामि प्पुतनिका ।

नमोनमः ।

संस्कृतभाषा शिक्षणे भरताम् सरैषाम् स्वागतम् । आवस्तु मम
पविचयं रदामि । मम नाम गजेन्द्रः । अहं शिक्षकः ।
भरान रदतु ।

भरान् कः । भरती का ।

भरान् उतिष्ठतु । भरान् उपरिशतु ।



भरान् उँत्तिष्ठाति । भरती उँपरिशेति ।

भरंठः उँत्तिष्ठाति । भरवः उँपरिशेति ।

उँपरिशेति- उँपरिशेत्तु ।

रदत्त- रदत्तु ।

गायत्त- गायत्तु ।

खहं एकरचनं रदामि । भरत्तुः रहृरचन रदत्तु ।

नृत्त- नृत्ति ।

खहम् उँत्तिष्णामि । - खहम् उँपरिशामि ।

खहं पठामि ।

रयम् उँत्तिष्णामः ।

भरत्तुः उँपरिशामः ।

भरान् गच्छति । - भरत्तुः गच्छति ।

भरती गच्छत्तु । - भरवः गच्छत्तु ।

सः -ते

एषः - एते

कः - के

तत्- तानि

एतत्- एतानि

किम्- कानि ।

खहं गच्छामि ।



रयं गछामः ।

भरान् गछतु- । - भरन्तुः गछन्तु ।

भरती गछतु- भरताः गछन्तु । एतस्य-तस्य(प्र.)

एतस्याः -तस्याः (स्त्री.)

सा ताः

एषा- एताः

का- काः

गछतु- गछन्तु ।

खत्र कति प्सुकानि सन्ति ।

चल्लावि प्सुकानि सन्ति ।

हवीशीः गणयतु । कति खर्क्याः सन्ति ।

कति पर्णानि सन्ति । षष्टं पर्णानि सन्ति ।

कति चमषाः सन्ति । खण्डं चमषाः सन्ति ।

पाल्दराः कति जनाः । पाल्दराः पथ्य जनाः ।

कौवराः कति जनाः । कौवराः शीत जनाः ।

रर्षे कति मासाः सन्ति । रर्षे द्वादशी मासाः सन्ति ।

मासे त्रिंशः दिनानि सन्ति ।

पम्फे पथ्यदशे दिनानि सन्ति ।



अत्र त्रिंशत जनाः सन्ति ।

अत्र कति जनाः सन्ति ।

त्रिंशत दन्ताः सन्ति ।

कति दन्ताः सन्ति ।

एषः दल्लः / हस्तः ।

दल्लः हस्तु अस्ति ।

दल्लः ह्व अस्ति ।

एषः आसन्द अस्ति ।

एषः श्रुतः ।

एतत् धनम् । धनं कोषे अस्ति ।

रात्रि पत्रिकायाम् अस्ति ।

स्नानिका/हनं स्नानिकायाम् अस्ति ।

जनं कृप्याम् अस्ति ।

अङ्गन्याकम् अङ्गन्याम् अस्ति ।

रुक्मः - रुक्मे

आपणः - आपणे

रित्तकोषः - रित्तकोषे

रिद्यानयः - रिद्यानये

पुस्तकः - पुस्तके



हिमानयः - हिमानये

माङ्गः - मार्गे

खामन्दः - खामन्द

मन्दिवम्- मन्दिरे

नगवम्- नगरे

स्थानिका- स्थानिकायाम्

संचिका- संचिकायाम्

पेठिका- पेठिकायाम्

कूपी- कूप्याः

घटी- घटाः

खरूनी- खरूण्याः

नेथनी- नेथन्याः]

सृते प्सुकम् अस्ति ।

राठिकायां हनम् अस्ति ।

नेथन्याः मसी अस्ति ।

नद्याः नीवः अस्ति ।

गदानीम् अहं शैद्धयं रदामि । भ्रतुः योजयिन्ना/ मिनिन्ना

रदतु ।



नखनडुँ उँतुव प्रदेशे अस्ति ।
भोपान मध्यप्रदेशे अस्ति ।
झुँझुँ महावाष्ट्रे अस्ति ।
मैसूरु कर्णाटके अस्ति ।
गदानीं भुरनुः एकैकं राकां कथयन्तिरः ।
कः रदति आवसु ।
शिक्षकः रिद्यानये अस्ति ।
दन्ताः झुँजे सन्ति ।
मम गृहं भावत देशे अस्ति ।
भावत देशे हव्र अस्ति ।
मम गृहं भावत देशे रिहाव प्रदेशे अस्ति ।
रिहाव प्रदेशे हव्र अस्ति ।
रिहाव प्रदेशे मधुरनी मंडने अस्ति ।
मधुरनी मंडने हव्र अस्ति ।
मधुरनी मंडने मेहथ ग्रामे अस्ति ।
मेहथ ग्रामे हव्र अस्ति ।
तत्रैर अस्ति ।
अहं पञ्चरादने उँतिग्यामि ।
भरान् कदा उँतिग्याति ।
भरान् कदा दंतधारणं करोति ।
अहं सार्ह सपुत्रादने योगात्सं करोमि ।



अहम् अग्रदने रिद्यानयं गच्छामि ।
भरती कदा रिद्यानयं गच्छति ।
भरती कदा पूजां करोति ।
गदानी कदा गति शिद्धम् उपयोज्य प्रश्नं पृच्छन्तु ।
अहम् उत्तरं रदामि ।
भरान् कदा पूजां करोति ।
अहं पञ्चदने पूजां करोमि ।
अहं न फीडामि ।
वरीन्द्रस्य दिनचरे अत्र अस्ति ।
गदानीम् अहं चित्रं दर्शयामि । भरन्तुः राकां रदन्तु ।
वरीन्द्रः पादोन अग्रदने स्नानं करोति ।
वरीन्द्रः अग्रदने अम्पाहावँ स्वीकरोति ।

(अन्वरत्ते)

7. मिथिना कना- चित्रकना



चित्रकाव उमेशि हमाव महतो



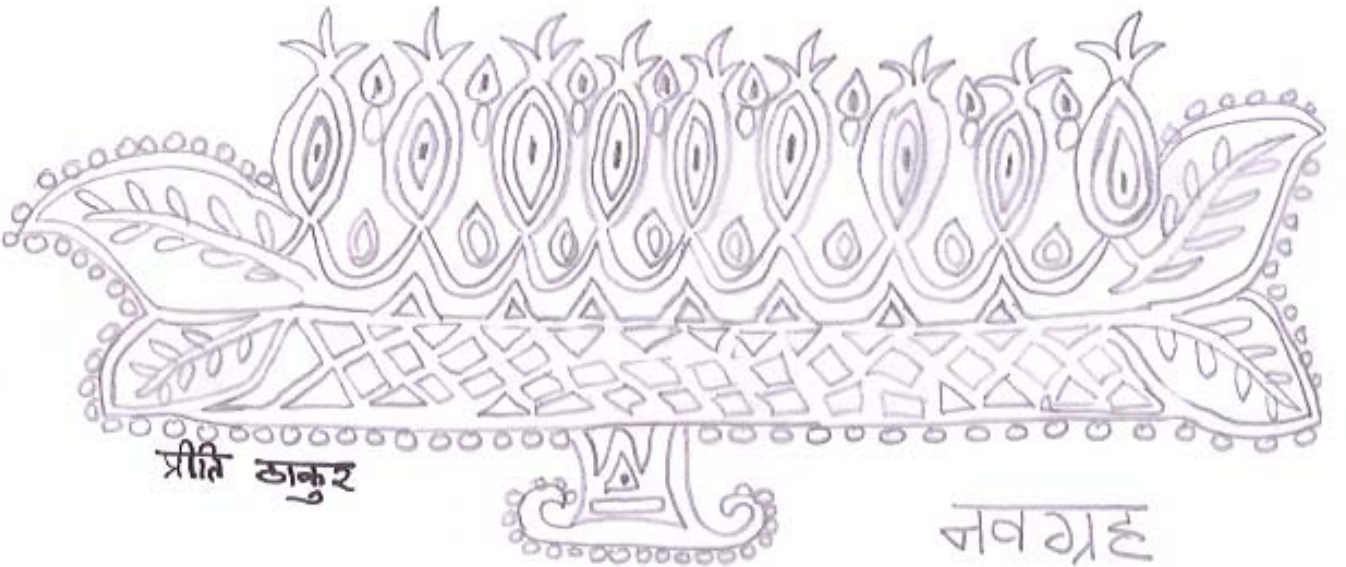
मधुश्रीरणी खविपन

गतार्कमे एकव चर्चा छन जे मधुश्रीरणीमे संगमे सूर्य चन्द्र गौब,
साठि खा नरग्रहक चित्र सेहो निखन जागत खछि ।

एकव चित्र एहि अंकमे प्रस्तुत खछि ।



साहि
प्रीति ठाकुर



प्रीति ठाकुर

जव गृह









सय
प्रति ठाकर



यजुसा
प्रति ठाकर



8. संगीत शिक्षा

(खाँगा)

गायन कान सेहो मन्त बाग-बागिनीक हेतु निश्चित बहत
खुष्टि ।

12 रँजे दिनसँ 12 रँजे बाति धवि पूरँगि खाँ 12 रँजे बातिसँ
12 रँजे दिन धवि उँतुवाँग बाग गाउन-रँजाउन जागत खुष्टि ।

पूरँगि बागक रादी स्वर मे कोनो एक ठाँ (सा, रे, ग, म, प)
होगत खुष्टि ।

उँतुवाँगक रादी स्वरमे (म,प,ध,नि,सा)मे सँ कोनो एक ठाँ होगत
खुष्टि ।

सूर्येदिय खाँ सूर्यस्तिक समयमे गाउन जूँखाय रँना बागकेँ संधि



प्रकाशि बाग कहन जागत खट्टि ।

बागक जाति

बागक थारोह था' खररोहमे प्रहकतु सबक संख्याक थाधाव पव बागक जातिक निधविण होगत खट्टि ।

एकव प्रधान जाति तीन ठा खट्टि ।

1. संपूर्ण (7)

2. षाडर(6)

3. षुडर(5)

था' एहिमे सामान्य सब संख्या दमशः 7,6,5 बहत खट्टि ।

थारँ एहि थाधाव पव तीनूकेँ फेँठू ।

संपूर्ण-षुडर की भेन ? हँ पहिन बहत थारोही था' दोसब बहत खररोही ।

कहुँ थारँ । (7,5) एहिमे सात थारोही सब संख्या था' 5 खररोही



स्वव संख्या खच्छि । संपूर्णक सामान्य स्वव संख्या डुपव निखन खच्छि(7)
थां ँडरक (5) । तखन संपूर्ण-ँडर भेन(7,5) ।
खहिना 9 तवहक बाग जाति होयत ।

- 1.संपूर्ण-संपूर्ण(7,7)
- 2.संपूर्ण-षाडर(7,6)
- 3.संपूर्ण-ँडर(7,5)
4. षाडर-संपूर्ण- (6,7)
5. षाडर- षाडर - (6,6)
6. षाडर -ँडर (6,5)
- 7.ँडर-संपूर्ण(5,7)
- 8.ँडर- षाडर(5,6)
9. ँडर- ँडर(5,5)

थाँः



(खनुवर्तते)

9. रानानां थते

एकान्नी

थपाना थानेया

पात्र:

थपाना: ऋगरेदिक ऋचाक नेथिका

थत्रि: थपानाक पिता

रेद्य 1,2,3:

थशास्त्रि: थपानाक पति ।

रेषभूषा

उतवीय रन्व (पुवष), रक्कन, जूहीक माना(थपानाक केशीमे),
दन्द ।



मंच सज्जा

सहकाव-रुङ्ग(खामक गाछी),
रेदी, हरिआरु, बथक छिद्र, हगक छिद्र,
सोनाँमे साही, गोहि खाँ गिबगाँ ठ ।

दूथ एक

(खामक गाछीक मध्य एक गोठ रौनिका खाँ रौनक) ।

रौनिका: हमब नाम खपाना खछि । हम ऋषि खत्रिक पुरी छी । खहाँ
के छी ऋषि रौनक ।

रौनक: हम शिक्षाक हेतु खायन छी । ऋषि खत्रि कतए छथि ।



अपाना: ऋषि जनशिय दिशि नहयराक हेतु गेन छथि, अरिंते होयताह ।

(तखनहि दहिन हाथमे कमंडन आ राम हाथमे रक्कन नेने महर्षि अत्रिक प्रवेशे ।)

अत्रि: पुत्री अ कोन रानक आयन छथि ।

अपाना: ऋषिरव । आश्रमरामीक संख्यामे एक गोठ रूझि होयत । अ रानक शिक्षाक हेतु...

रानक: नहि । हमव अखन उपनयन नहि भेन अछि । हम अखन माणरक रनि उपाध्यायक नग शिक्षाक हेतु आयन छी । अ देखू हमव हाथक दल । हम दल- माणरक रनि सभ दिन अपन गामसँ आयरँ आ सानमे चनि जायरँ । हम रेंद मंत्रसँ अपविचित अनूच छी ।

अत्रि: रेंसे तखन अहाँ हमव शिष्यक रूपमे प्रसिद्ध होयरँ । दिनक पूरँ भाग प्रहण रिद्याक ग्रहणक हेतु बाखन गेन अछि । हम जे मंत्र कहरँ तकवा अहाँ स्वण बाखरँ । पुनः हम अहाँक रिधिपूरक उपनयन कवरौय संग न' खानरँ ।

रानक: रिपश्चित ग्वकक चवणमे प्रणाम ।

(पठाम्फेप)

दूथ दू



(उपनयन संस्कारक अंतिम दृश्य । अपाना खां किछु खान भ्रुषि रौनक रौनिकक उपनयन संस्कार कवाउन जा चुकन अछि ।)

अबि: अपाना । खरं अहाँक अमन शिक्षा खां रिद्या शुक होयत । (पुनः खान रिद्यार्थी सभक दिशि घूमि ।) अहाँ सभकेँ सारित्री मंत्रक नियमित पाठ कवरौक चाली । ॐ भूवभुरः सुः तमेरितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् । सरिता- जे सभक प्रेबक छथि- केव ररेण्य- सभकेँ नीक नागय रँना तेज- पृथ्वी, अंतर्विष्क खां सुखानोक-सरोँचि अकाशि-मे पसवन अछि । हम ओकव सुवण करैत छी । ओ' हमव रूँहि खां मेधकेँ प्रेवित कबथु ।

अपाना: पितरव । “ ॐ नमः सिङ्गम” केव संग रिद्याबन्धक पूर शिक्षाक अंतःकात की सभ पढाउन जायत ।

अबि: रर्ण, अम्बर-सुव-, मात्रा- ए-सु,दीर्घ खां प्लुत- रँनाघात- उदात्त, अन्वदात्त, सुवित- शुङ्ग उचावण, अम्बरक द्रमिक रिग्यास- रतनी-, पढरौक खां रँजरौक शीनी, एकहि रर्णकेँ रँजरौक कैकठा प्रकाव, अ सभ शिक्षाक अंतःकात सिखाउन जायत । साम संतान- जेकि सामान्य गान अछि- केव माध्यमसँ शिक्षा देन जायत ।

अपाना: ग्वकरव । अश्रिमक नियमसँ सेहो अरगत कवा देन जाय ।

अबि: रनक प्राणी अरध्या छथि । आहारार्थ हन पूर-संध्यामे रन-



बृहस्पतौ एकत्र कएन जायत । प्रातः खां सायं अग्निहोत्र होयत,
ताहि हेतु समिधा, कृशी, घृत-खाज्य-, एरम् दुग्धक रारस्था
प्रतिदिन मिनि-जुनि कय कएन जायत । हविणकेँ निरिग्न खाश्रिममे
ठहनरौक अन्नमति अछि । कदम्ब, अशोक, केतकी, मधुक, रङ्गन
खां सुदकावक गाढक मध्य खाश्रिममे यद्यपि पृषिक अन्नमति नहि
अछि, पवत्र अग्र्या भूमि पव स्रतः खां रीयाक द्वावा उपेन्न
अग्र्यपच अन्नक प्रयोग भ' सकैछ ।

रौनकः हम सभ एकहि रिद्यापीठक बहरौक कावण सतीर्थ छी ।
ग्वरव । दल्ल खां कमलनक अतिविक्रु किछुँ बखरौक अन्नमति
अछि ?

अत्रिः कष्टि मेथना खां मृगचर्म धावण कक खां अपनारकेँ एहि
योग्य रौनाडुँ, जाहिसँ द्वादशेर्षीय यत्र सत्रक हेतु अहाँ तैयाव
भ' सकी खां महायत्रक समाप्तिक पश्चात् ब्रह्मादय, रिदथ पविषद
खां उपनिषद ओ' अवाण्य संसदमे गर्त्तव रिषय पव चर्चा क'
सकी ।

(पठाम्फेप)

दुथ तान



(फेर्ठीवमे ऋषि खत्रि कैक गोष्ठ रैद्यक संग रिचाव-रिमर्शि कए बहन छथि ।)

खत्रि: रैद्यगण । रानिका खपानाक शीवीवमे ब्रुक रोगक नष्कण खारि बहन छथि । शीवीव पव द्वैत ऋग्यक नष्कण देखरामे खारि बहन छथि ।

रैद्य 1: कतरा महिनासँ कतेको ँषधिक निर्माण कए रानिकाकेँ खोखाउन, खाँ नेपनक हेतु सेहो देन ।

खत्रि: खपाना खारि रिराहयोग्य भ' बहन छथि । हूनका हेतु योग्य रव सेहो तकि बहन छी ।

रैद्य 2: प्रशाश्रिक रिषयमे स्वनन छथि, जे ओ' सर्रग्वसंपन्न छथि, खाँ बृह् माता-पिताक सेरामे नागन छथि । ओ' खपन खपानाक हेतु सर्रखा उपहाऊ रव होयताह ।

खत्रि: तखन देवी कथीक । खपने सभ उँचित दिन हूनकब माता-पितासँ संपर्क कक ।

दूथ चावि



(आश्रिमक सहकाव-रुङ्गमे रौराहिक रिधिक अन्वुष्ठान अछि । रेदी रँनाउन गेन अछि, आ' ओतय अरिज नोकनि जर-तीन केव हरन क' बहन छथि ।)

अपाना(मोने मोन): माथ पव त्रिपुडक भरा-रेखा, आ' शीवी-सौष्ठरक संग रिनयक मूर्ति, अएह प्रशान्ति हमव जीरनक संगी छथि ।

(तखने प्रशान्तिक नजबि अपानासँ मिनैत छन्हि, आ' अपाना नजबि नाँचा कए नैत छथि । । अदा अतीरक मयदिकेँ बथैत ननाठ डुँचे रँनन बहत छन्हि ।)

अत्रि: उपस्थित अरि-मलनी आ' अग्निकेँ साम्नी मानैत, हम अपाना आ' प्रशान्तिक पाणिग्रहण कवरैत छी ।

(अग्निक प्रदक्षिणा करैत कान प्रशान्तिक उँतवीय रस्र कनेक नाँचा अमि पडन आ' अपानाक केशिक जूही-माना पृथ्वी पव अमि पडन ।)

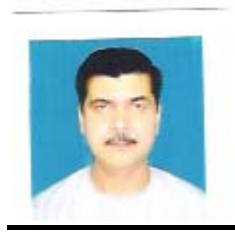
दुथ पाँच

(अनुवर्तते)



10. पंजी प्रबंध

श्री रिद्यानन्द ना"मोहनजी" पंज्जीकाव



अतः रिवाहक पहिन चवण अधिकारक निर्णय बहन होयत । रव पम्क ओ' कन्या पम्कक नोक पवम्पव रैसि अपन-अपन पविचयक आधाव पव निर्णय करैत छन होएताह, जे "अम्क" कन्यासँ "अम्क" रवक रिवाह हो रा नहि । अदा पविचय बखरौक प्ररुतिक द्वासक कावणै अधिकार-निर्णयक हेतु प्रम्क पविवाक सुयोग्य ओ' आसुवारान र्याजि अपन यारतो पविचय(32 मूनक उल्लख) निथि कए बाखय नगनाह । सातम शौद्धिसँ पूरहि ए निथित कौनिक पविचय 'समूह नेथ' क उल्लख सरप्रथम रिद्वरैण्य फुमाबिन भुष्ट बचित 'तंत्र रार्तिक'मे भेन अछि, जे मीमांसा दर्शनक जैमिनी सूत्रक शैरव द्वावा कएन भाष्यक ग्द्यामेक 'रार्तिक' थीक । तंत्ररार्तिक दर्शनक ग्रंथ थीक जाहिमे यथार्थ रसुस्थितिक रर्णिसँ जातिक



रिशुह्रि सिह्र कएन गेन अछि । जाहि आधाव पब धर्मक निरूपण
भए सकैत । ह्रुमाबिन भृष्टक कहँ छनन्हि जे “ रँडका ह्रुनीन
नोक रँड रिशेष प्रयनेसँ अपन जातिक बर्र्का करैत छथि ।
तेहि त' अ्रुत्रिय ओ' ब्र्राह्मण अपन पिता-पितामहादिक पबस्पा
रिसबि नहि जाए तै समूह-नेथ्य चनौनन्हि । ओ' प्रर्रुक ह्रुनमे
गुण आ' दोष देखि ओहि अन्रुकप सम्र्रंध कबर्रामे प्रर्रुत होगत
छथि ।

“रिशिशुनेर हि प्रयनेन महाह्रुनीनाः पबिअ्रुन्त्रि आमोनम् अनेनेर
हि हेतुना बाजाभिब्र्रह्मिणैश्च स्र पित्र-पितामहादि पावस्पर्यो
रिस्रुणार्थ समूहनेथ्यानिर्रुतिर्रितानि तथा च प्र्रतिह्रुनं गुण-दोष
स्रुणतिदन्नुकपाः प्र्रभ्रुति-निर्रुतयो दृश्रुते” ।

(तंत्ररार्तिक, अध्याय 1, पाद-2, सूत्र-2क रार्तिक)

ह्रुदा तेबहम शिताह्रुिक उँतुवार्ध होगत-होगत साधावण नोकक
कौन कथा पल्लित नोकनि समेत समूह नेथ्य बाखरँ छोर्रि
देनन्हि । एकब पबिणाम अ्रु भेन जे पं हबिनाथ उँपाध्याय(धर्म-
शास्त्रक महान ब्र्राता) “स्रुतिसाव” सन धर्मशास्त्रक रिषयक ग्रंथकर्त्रि
ओ' महार्रुडित पबिचयक अ्रुभारमे रिराह कए नेन, स्रुजनमे
अ्रुनधिकारमे अपन सास्त्रात पितयौत भागक दौहित्रीमे ।



हनतः चौदहम शताब्दीक तृतीय दशक होगत-होगत एहि कौनिक पविचयकेँ रिशिष्ठ, पलितक अधीन कए देरौक खारशुकताक खनुभर कएन जे रिराहक समय अधिकावक निर्णय कए सकथि । मिथिनाक तकौनीन शीसक बाजा हबिसिंहदेरक प्रेषणसँ मिथिनाक पलित लोकनि शीके 1248 तदनुसाब 1326 ङ. मे निर्णय कएनन्हि, जे “ पविचय बाखरँ लोककेँ अपना पब नहि छोड़न जाय, प्रभूत ओकवा संगृहित कए रिशिष्ठ, पलितजनक जिम्मा कए देन जाए, ओ’ ङ बाजकीय एक गोष्ठ रिभाग रँना देन जाए जाहिसेँ पलित बाजात्रासँ निहङ्ग होथि सह संगृहित पविचय बाखथि । प्ररक रिराह तखनहि शिव हो जखन निहङ्ग पंडित(पङ्गीकाव) अधिकाव जाँचि कए निथिके देखि, जे अद्भक कन्या ओ’ अद्भक रब ‘स्रजना’ नहि छथि । अथत् शीम्व्रीयनियमानुसाब कन्याक संग रबकेँ रैराहिक अधिकाव छन्हि । गयेह पत्र ‘अस्रजन पत्र’ रा ‘सिह्वांत पत्र’ कहौनक । आगयो कन्या रबक रिराह पूर अधिकाव जँचाए सिह्वांत पत्र नेन खारशुक रूमन जागत अछि । पङ्गी-प्रबंधमे गएह सभसँ प्रधान नियम नेन जे रिन्न सिह्वांत नेने रिराह अशीम्व्रीय मानन जायत । ‘अस्रजन पत्र’ देनिहाब बाजात्रासँ निहङ्ग गएह पलित पङ्गीकाव कहओनाह । संगृहित पविचय जाहिमे प्ररक नर जन्म ओ रिराह जोड़न जाय नागन से नेन पङ्गी । जिनकब पङ्गीमे आएन से नेनाह पङ्गीरँह ।



महाबाज हबिसिंहदेर ओ' तकौनीन पल्लितक संग्रह निर्णय खनुसाव पबिचेता नोकनिक निहकित्त कए समस्त मैथिन ब्राह्मणक सम्पूर्ण पबिचय संगृहित कएन गेन । पबिचेता नोकनि घुमि-घुमि प्रलेक पबिरावक ह्नुथा र्याजिसँ हुनक पबिचय प्बुद्धि निथि नेन कबथि । सामान्य रूपे छुओ प्रकषक पबिचय सभ जनेत बहथि । किछु गोष्ठा एहिँ रँहूतो अधिक पबिचय जनेत बहथि । एहिना किछु गोष्ठाँ मात्र दू रा तीन प्रकषक ज्ञान बथेत छनाह । जे जतरा जनेत बहथि हुनकाँ ओतरँहि संग्रह कए हुनकव पूर्वजक राम-स्थान, गोत्र, प्रब तथा हुनक रेद ओ' शीखाक सूचना निथि नेन जागत बहए । एहि संग्रहँ एकहि हनक अनेक शीखा जे रिभिन्ना ग्राममे रँसत छनाह, तकव पबिचय एकत्र भए गेन । एहि रूपे गोत्रक खनुसाव भिन्न-भिन्न हनक सम्पूर्ण पबिचय प्राप्तु भए गेन । एहि पबिचय संकननक समय सभँ प्रह्नुथ मानन गेन रीजती प्रकष ओ मून ग्रामकेँ । कावण कौनिक पबिचयक हेतु सराधिक उपयोगी गयेह सूत्र भेन । रिभिन्न गाममे रँसत एकहि हनक रिभिन्न र्याजिक कौनिक पबिचय एहि मून ग्रामक आधाव पब संगृहित कएन गेन बहए । एहि कावणे पङ्गीमे अनिरार्य रूपँ मून ग्रामक उल्लख भेन अछि । पङ्गी-प्ररंधक समय जे र्याजि जतए रँसत बहथि से हुनक भारी संतानक ग्राम कहउनक ओ पबिचय निथौनिहाव अपन पूर्वजक प्राचीनतम राम स्थानक जे नाम कहन से ओहि र्याजिक मून भेन । एहिना प्रलेक हनक प्राचीनतम



ज्ञात पूरज ओहि फनक रीजि प्रकष कहाउन । एकव प्रमाणमे एक गोष्ठ उदाहरण देखन जाए सकैत छति । काशुप गोत्रीय एक महाहन जकव शितारधि शोखा मिथिनामे खनुरतमान बहए, संगृहित पविचयक खाधाव पव मूनतः मालुव ग्रामक रासी सिह्र भेनाह । झुदा पङ्गी-प्ररंधसँ रहत पहिनहि, एकव दू गोष्ठ शोखा स्पष्टतः प्रमाणित भए गेन । एक मँगरौनी गामक खाँ दोसब गह-गामक । अतः पङ्गीमे खादिखिसँ मालुवक संग-संग गह ओ मँगरौनी रिशेषण जोड़न जाए नागन । झुदा उपनह्र पविचयक खाधाव पव दू एकहि फनक दू शोखा सिह्र भेन । तेय दू फनक मून एकहि भेन ओ रीजि प्रकष सेहो एकहि भेनाह ।

गोत्र- कहन जागत छति जे सकन गोत्रक समस्त जन समुदाय एकहि प्राचीनतम ज्ञात महाप्रकषक रंशज थिकाह । अएह प्राचीनतम ज्ञात महाप्रकष गोत्र कहाए स्वरिख्यात छथि । श्री एम.पी. चिंतानान बार महोदय चाबि हजाब गोत्रक सूची तैयाब कएने छथि । “ खमबकोष”मे गोत्रक हेतु तीन अर्थ देन गेन छति- परत, रंशि खाँ नाम । “राचस्पल” कोषमे गोत्रक एगावह अर्थ देन गेन छति- परत, नाम, ज्ञान, जंगन, खेत, म्कत्र, संघ, धन, मात्रा, वृह्नि खाँ झुनि नोकनिक रंशि । प्राचीन संस्कृत साहित्यमे गोत्र शिद्धक प्रयोग प्रायः रंशि रा पितक नामक नेन भेन



थछि । छान्दाग्य ँपनिषद (4/4) मे जीरन ग्वक सलकामसँ गौत्र पुष्टेत छथिन्ह तँ हुनक थलिप्राय सलकामक हून थञ्जा पिताक नामसँ छन्हि, ह्नुदा ऋगरेदमे गौत्रक ँल्लथ चाबि ठाम मेघ थथरा पहारक नैन थ' दू ठाम पशु समूह थथरा जनसह्नुदाय थथरा पशु बस्करक कपमे भेन थछि । थंततः रंश थथरा परिवरबक थथमे गौत्र शैलक प्रयोग पश्चातक प्रयोग थिक । रंश थथरा परिवारबक थथमे गौत्रक प्रयोग सरप्रथम छान्दाग्य ँपनिषदमे भेन थछि ।

मेथिन ब्रौह्मण समाजमे गौत्र रंश-रौधक थिक । मेथिन ब्रौह्मणक समस्त गौत्र पितृ प्रधान थिक- थथति प्रलक गौत्र थपन-थपन रंशिक प्राचीनतम त्रौत महाप्रकषक नाम थिक । मेथिन ब्रौह्मणमे सभ मिनथ 20 गौठ गौत्र थछि । मेथिन ब्रौह्मणमे सात गौठ गौत्रक हून रारस्थित, सुपविचित ओ रहुसंथक थछि । ङ सात गौठ गौत्र थिक-

- 1.शाल्दिन्य
- 2.रसे
- 3.काशुप
- 4.सारर्ण
- 5.पवाशिव



6.भावद्राज

7.कात्यायन । शेष 13 गोष्ठ गोत्र थीक-

1.गङ्गा

2.कौशिक

3.खनास्रुकाम्फ

4.प्रञ्जात्रेय

5.गौतम

6.मोद्गन्य

7.रशिष्ठ

8.कौलिन्य

9.उपमन्यु

10.रुपिन

11.रिङ्गरुहि

12.तन्दि

13.जातिकर्ण ।



श्रल्लक गोल्रमे कतोक मून थछि । मिथिनामे 153 मूनक ब्रौह्मणक पविच्छय प्राप्त होगत थछि । कतेक मून एहन थछि, जे एकसँ थधिक गोल्रमे पाउन जागत थछि । 'ब्रौह्मपुवा' एकठा एहने मून थिक । एहि मूनक ब्रौह्मण- शौल्लिन्य,रसे,काथुप,थनासुकासु,गौतम ओ गअ गोल्रमे पाउन जागत छथि ।

श्रव- श्रवक उल्लथ रौदिक यगमे दर्श ओ पौर्णमास नामक गण्डिमे भेटैत थछि । ग गण्डि सभ थान सभ प्रकारक यत्रक थ्राधाव थीक । थतः एहिमे श्रवक पाठ होगत थछि । एहि पाठक प्रयोजन तखनहि होगत थछि जाहि ऋण यत्राग्नि उद्विपु कवएरौनी(सामधेनी) ऋचाक पाठक थनंतव थध्वर्य ओहि थग्नि पव थ्राज्य(घृत) दैत छथिन्ह । एकव निहितार्थ थछि जे श्रव, यत्रमे थग्निकेँ रँजएरौक प्रार्थना थीक । श्रवकेँ रौदमे 'थार्षेय' सेहो कहन गेन थछि- जकव थर्थ थिक ऋषिसँ संरंधवाथए रँना(ऋश्वद- 09/97/51) । शौनक ऋषिक सुविख्यात पूरज नोकनि मैथिन ब्रौह्मण मध्य श्रव कहरैत छथि थथत् ऋगरेदक ऋचाक प्रणेता नोकनि श्रव थिकाह ।

मैथिन ब्रौह्मणक मध्य 2 रअक श्रव पविवाव होगत थछि- त्रिश्रव थ्रा पाँच श्रव । जाहि गोल्रक तीन गोठ पूरज ऋगरेदक सूजक बचना कएन से त्रिश्रव थ्रा जाहि गोल्रक पाँच गोठ पूरज नोकनि ऋगरेदक सूजक बचना कएन से पाँच श्रव कहरैत छथि ।

1. शौल्लिन्य- शौल्लिन्य, थसित थ्रा देवन.
2. रसे---] ओर, चरन,भाअर,जामदगन्य थ्रा थप्लारन ।
3. सारण---] ओर, चरन,भाअर,जामदगन्य थ्रा थप्लारन ।



4. काष्ठप-काष्ठप, खरसोब आ' लैघुर.
5. पवाशिव-शेजि, रशिष्ट आ' पवाशिव.
6. भावद्वाज-भावद्वाज, आंगिवस आ' राहस्पति.
7. कावयन-कावयन, रिष्ट आ' आंगिवस.
8. गत्र-गार्गी, घृत, रेशम्पायन, कौशिक आ' माल्दराथर्न ।
9. कौशिक- कौशिक, अत्रि आ' जमदग्नि.
10. अनासूकाम्-गत्र, गौतम आ' रशिष्ट.
11. षष्ठ्यायेय-षष्ठ्यायेय, आपन्नान आ' सावस्रत.
12. गौतम-अग्निवा, रशिष्ट आ' राहस्पति.
13. मोदगना-मोदगना, आंगिवस आ' राहस्पति.
14. रशिष्ट-रशिष्ट, अत्रि आ' सप्रति.
15. कौलिन्द-अस्तिक, कौशिक आ' कौलिन्द.
16. उपमन्यू-उपमन्यू, आंगिवस आ' राहस्पति ।
17. कपिन-शातातप, कौलिन्ना आ' कपिन.
18. रिष्टरुष्टि-रिष्टरुष्टि, कौवपुष्ट आ' वसदस्य.
19. तन्डी-तन्डी, सांथा आ' अंगिवस.

गोत्र आ' मून

शौलिन्दा- दिर्धोषि(दिघरे), सविमर, महूखा, पर्वपल्ली(परौनी), खल्लरना, गंगोनी, यम्नशाम, कविखन, मोहवी, सन्खान, मड्गव, पल्लानी, जजिरान, दहिमत, तिनय, माहर, सिन्धुखान, सिंहाश्रिम, सोदवपुव, कड्गविया, अन्नावि, होगयाव, तन्हनपुव, पविमवा, पवसड्ग 1, रीवनाम, उतुमपुव, कोदविया, छतिमन, रवेरा, मधुखान, गंगोव, भठेव, रूधोवा, ब्रह्मपुवा, कोगखाव, केठहिराव, गंगुखान, घोषियाम, छतौनी, भिगुखान, ननौती, तपनपुव ।



रसे- पन्नी(पानी), हविखन्न, तिस्रवी, बाँडर, ठकुरान, घुसोत, जजिरान, पहन्दी, जल्लकी(जानय), लन्दरान, कोगयाव, केवहिराव, ननोव, डरुाव, कवमहा, रूधरान, मडुाव, नाही, सोनी, सकौना, हनन्दह, मोहवी, रंठरान, तिसडुँत, रकखानी, पल्लोनी, रहेठाळी, रवेरा, खनय, भाषाविसमथ, रंभनियाम, उचति, तपनपुव, रिथुखान, नवरान, चित्रपन्नी, जवहर्षिया, ब्रह्मपुवा,सरौनी ।

काथप- ओगनि, थोखान, संकवाळी, जगति, दविहवा, मालुव, रनियाम, पचाडुव, कठाग, मतनखा, पल्लुखा, मानिछ, मेवन्दी, नदुखान, पकनिया, रूधरान, दिभू, मोवी, भूतहवी, छान, रिस्फी, थविया, दोसुती, भरेहा, हसुपुन, नवरान, नगुवदह ।

सारर्ष- सोन्दपुव, पनिचोभ, रवेरा, नन्दाव, मेवन्दी ।

पवाशिव- नरौन, सुवगन, सहवी, सुगवी, समुखान, दिहरान, नदाम, महेशोवि, सकवहोन, सोगनि, तिनय, रवेरा ।

भावद्वाज- एकहवा, रिनुपखक(रैनौँच), देयाम, कनिगाम, भूतहवी, गोळुाव, गोधुनि ।

कालायन- हजोनी, ननोती, जल्लकी, रतिगाम ।

खनामुँकाम्फ- रसाम,कठाग, ब्रह्मपुवा ।

गार्गी - रसहा, रसाम, ब्रह्मपुवा, सुवोव, रिधोव, उवोव ।

कौशिक- निठेवति



धरुनात्रेय- लोहना, बूसरन, पौदौनी ।

मौदुन- बतरान, मानिछ, दिघौष, कपिङ्गन, जल्लकी ।

गौतम- ब्रह्मपुवा, उंतिमपुव, कोगयाव ।

रशिग- कोथुथा ।

कौडिन- एकहवा, परौन ।

जातुकर्प- देरहाव ।

तडि- कठाङा ।

मिथिनाधीश कर्णाठि रशीय ऋत्रिय महाबाज हविसिंहदेर जीक
सभामे उपस्थित सत्र लोकनि महिन्द्रपुव पडुथा मुनक सदुपाध्याय
गुणाकव नार्के मैथिन ब्रह्मणक पङ्गी प्ररुक्क भाव देनहि

नन्दह् शुनं शशि शोक ररुषे (1099 शौके) तच्छ्रारणस्य धरने
ऋनितिथधसुतात । स्रुती शैलेशचर दिने स्रुपूजित नल्ल श्री नानुदेर
नृपतिरुधरधीत रासुं ॥ 1 ॥ शौस्तानान्द पतिरुभूत नृपतिः श्री
गंगदेरो नृपसुत सूनू(पुत्र) नवसिंहदेर रिजयी श्री शिङ्गि सिंह
सुतः तत् सूनू खनू वाम सिंह रिजयी भूपानरंत सुतो जातः श्री
हविसिंह देर नृपतिः कर्णाठि चूड मणि ॥ 2 ॥ श्रीमंत गुणरनु
ऋतुम ऋनस्राया रिगुह्मशीयं सङ्गतान्न गरुषणोसुक यातः

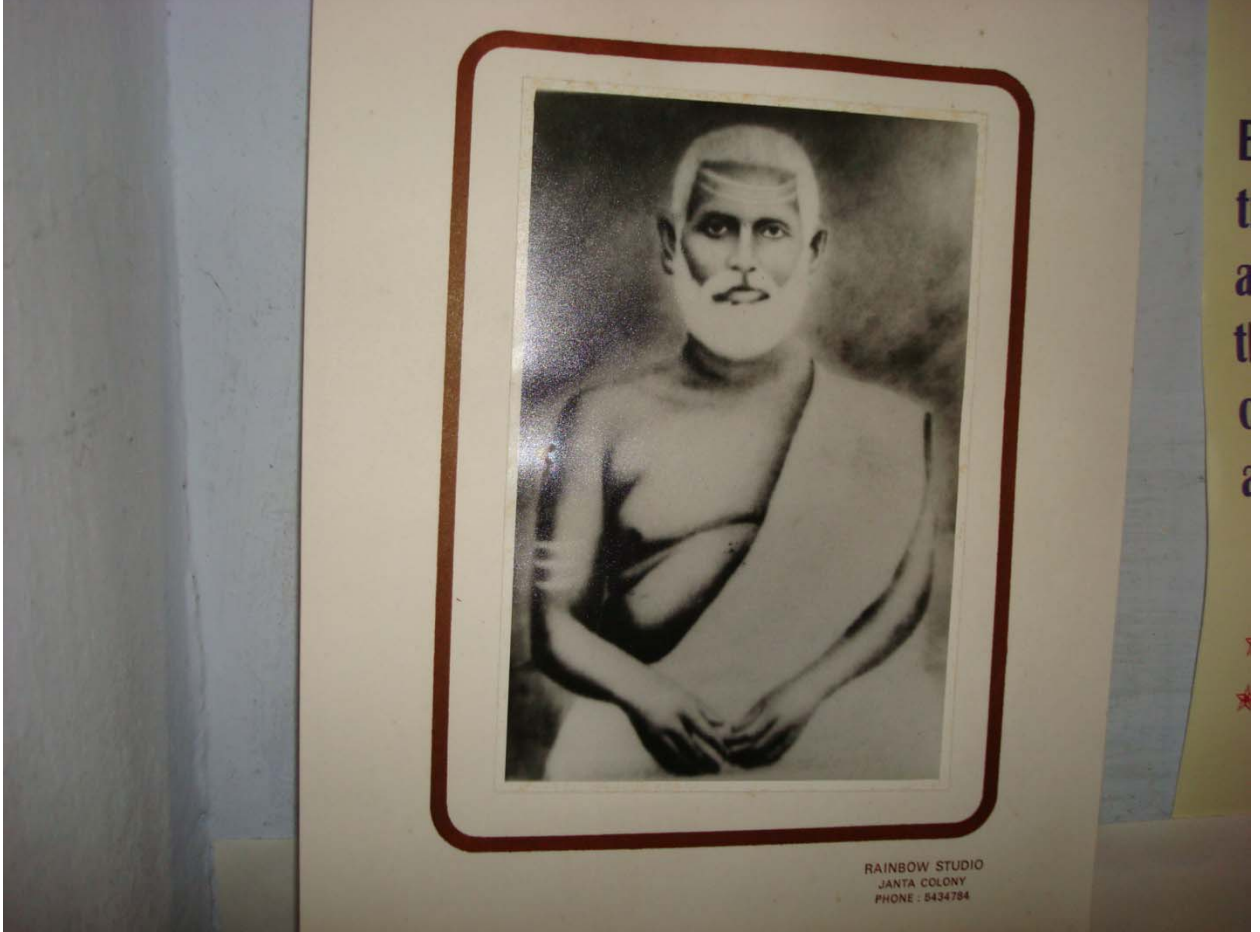


सरन्विर्याङ्गिष्कमां चातुर्यश्चतुवाननः प्रतिनिधिंभ्रवा च्चतुष्कारिमां
पंचादिवह्नारिता रिरजया दिव ददो पङ्क्तिंकाम् ॥ 3 ॥

ভূপানরনি মৌনি বনে ঋহুঠেনকাব হিবাংহব
জ্যাসোজ্ঞান যঠান মান শিশিনি: নীনথ চখনমতার:
শৌভা ভাজি গ্ণাকরে গ্ণরতা মানন্দ কন্দাদরে
দৃষ্ণামো হবিসিংহ দেব নৃপতি: পাণৌ দদৌ পঙ্ক্তিংকাম ॥ 4 ॥
দৃষ্ণা সভা শ্রী হবিসিংহদের রিচার্য চিতে গ্ণিশী সহিষ্ঠৌ ॥
গ্ণাকরে মেথিন রংশী জাতে পঙ্ক্তি দদৌ ধর্ম রিরেচণার্থম ॥

(খবুরততে)

11. মিথিলা খা' সংস্কৃত(সরতংব্রস্রতংব্র রঁচা
নাক জীরনী)



सरतंत्र स्रतंत्र श्री धर्मदत्त न्या(रँचा न्या) (1860 ङा.-1918 ङा.)

मिथिना आ' संस्कृत सुंभमे एहि थंकमे सरतंत्र स्रतंत्र श्री धर्मदत्त न्या जिनकर प्रसिद्धि रँचा न्याक नामसँ रँशी छन्हि, केव जीरनी द' बहन छी ।



मधुर्नी जिनांतञ्जात नराणी(नरानी) गाममे हिनकब जन्म भेलन्हि । रावाणसीमे श्री विश्वज्ञानन्द सबस्रती खाँ रानशोस्त्रीसँ शिक्षा ग्रहण कबरौक रौद गाम खाँ गेनाह खाँ शोबदा भरन रिद्यापीठक स्थापना गामेमे कएनन्हि । ग्वकहन पञ्चति सँ एतय संग्यासी खाँ गृहस्र शिक्षा ग्रहण करैत छनाह । रिद्यार्थीगणक खर्चा ग्वकजी उठरैत बहनाह । द्वाबकाक शंकवाचार्य हिनका आमंत्रित कए नरान्यायक अध्यायन कएनन्हि । आस्तिक खाँ नास्तिक खाँ नरान्यायक रिद्वतक दृष्टिये हिनका सरतंत्र स्रतंत्रक उपाधि देन गेनन्हि । हिनका रँचामे लोक रँचा ना कहैत छनन्हि, खाँ ग्रएह नाम धर्मदत्त नाक अपेक्षा रेशी प्रचनित बहन ।

हिनक प्रति सभ खच्छि ।

1. स्वनोचन-माधर चम्पू कार्या,
2. न्यायवार्तिक तापर्य रान्यान,
3. गृह र्थ तञ्जनोक(श्री मदभागरतगीता रान्याभूत मधुसूदनी ठीका पव)
4. रान्पिपंचक ठीका
5. खरछुदकन्न निवकित्त रिरेचन
6. सरान्भिचाव टिप्पण
7. सतप्रतिपक्क टिप्पण
8. रान्पुनगन रिरेचन



- 9.सिंहान्त नस्करण रिरक
- 10.रूपेतिराद गूठार्थ तन्नानोक
- 11.शिकित्तराद टिप्पण
- 12.खलन-खल्ल खाद्य टिप्पण
13. खद्वित सिंघि चन्द्रिका टिप्पण
- 14.रुक्काङ्गनि प्रकाशि टिप्पण.

12. भाषा खा' प्रीद्यागिकी

ख सँ ह तक रणमाना खछि । ऋ, ए ,उ ओनातँ
संयकतु खम्बव खछि, रुदा रँसँ हमबा सभ ख सँ उ
तक रणमानिक रूपमे पढने छी । श्रै सेहो ऋ, ए,
उ जेकाँ संयजु खम्बव खछि । उ केव उँचावण



ताहि द्वारा हमवा सभ ग खा' य केव मिश्रण द्वारा करैत छी से धवि गनत अछि । ग अछि ज खा' ँ केव संयुक्त । ऋ केव उच्चारण हमव सभ करैत छी, वी । नृ केव उच्चारण करैत छी, न, व खा' ग केव संयुक्त । ऋदा ऋ खा' नृ स्वयं स्वव अछि, संयुक्तास्त्वव नहि ।

रिदेहक आर्कगिरमे एहि रैव सँ श्रुत उच्चारणक आरंभिकताकेँ देखि कय थ सँ त्र तक सभ रर्णिक उच्चारण देन गेन अछि । एकवा डाउनलोड क' अपन खा' अपन रँचाक हेतु प्रयोग कए सकैत छी ।

मैथिली अकादमीक भाषाक मानकीकरणक प्रयासमे सहयोग करैक दृष्टिसँ ओकरा द्वारा निर्धारित मानकेँ बचना निखरैसँ पहिने काँनमे आन नर बचनक संग स्थायी रूपसँ देन जायत, जेना थ सँ त्र केव .mp3फागन आर्कगिरमे स्थायी रूपसँ डाउनलोडक हेतु उपनङ्ग बहत ।

मैथिली अकादमीक ग आग्रह जे संख्याक देरनागरी



कप प्रयोग कएन जाय, केव प्रयोग कप देरौक हेतु सभ एकमत नहि कहथि, भारतीय अंकक अंतर्वर्षीय कपक प्रयोगक देरनागबीमे चनन भ गेन अछि । ताहि द्वारे बचना निखरौसँ पहिने सुंभमे जे भाषाक मानकीकरणक संसृति अछि, ताहिमे देरनागबी अंकक प्रयोगक आग्रहकेँ हठा देन गेन अछि । भारतीय संरिधानक अनुच्छेद 343(1) कहत अछि जे संघक बाजकीय प्रयोजनक हेतु प्रयाज होमय रँना अंकक कप, भारतीय अंकक अंतर्वर्षीय कप होयत, झूदा बाष्ट्रपति अंकक देरनागबी कपकेँ सेहो प्राधिगत क सकैत छथि ।

(खबरते)



13. बचना निखरौसँ पहिने... (खाँगा)

1.पूरार्चिकमे फेमसँ खण्णि, गन्द्र खाँ सोम पयमानकेँ संरोधित गीत खँछि । तदुपवान्तु खाँब्याक काल्ड खाँ महानाम्नी खार्चिक खँछि । खण्णय, एन्द्र खाँ पायमान परकेँ ग्रामगेयण खाँ पूरार्चिकक शेष भागकेँ खाँब्याकगण सेहो कहन जागछ । सम्मिनित कपेँ एक श्रुतिगण कहत छी ।

2.उँतुवार्चिक: रिध्रति खाँ उँतुवगण सेहो कहत छी । ग्रामगेयण खाँ खाँब्याकगणसँ मंत्र छुनि कय फेमशि: उँहगण खाँ उँहगण कहरैछ- तदनुव प्रल्लक गण दशेवात्र, संरसेव, एकह, खँहिन, प्रायश्चित खाँ म्फुद्र परमे रौँठिन जागछ । पूरार्चिक मंत्रक नयकेँ स्वर्ण क' उँतुवार्चिक केव द्विक,त्रिक, खाँ चतुर्गुक खाँदि (2,3, खाँ 4 मंत्रक समूह)मे एहि नय सभक प्रयोग होगछ ।

खधिकशि त्रिक खाँदि प्रथम मंत्र पूरार्चिक होगत खँछि, जकव नय पव पूवा सृज(त्रिक खाँदि) गाउन जागछ ।



উত্তবাব্চিক উহাগণ খা' উহগণ প্রলেক নযক্ৰে তীন ব্ৰেব তীন প্রকাবে প্ৰক্ৰ-ছ। ব্ৰেদিক কৰ্মকাল্ডমে প্রস্তাব, প্রস্তাবতব দ্বাবা, উদ্বীত উদগাতব দ্বাবা, প্রতিঘাব প্রতিহাতব দ্বাবা, উপদ্রব পুন: উদগাত দ্বাবা খা' নিধান তীনু দ্বাবা মিনি কয গাওন জাগছ। প্রস্তাবক পহিনে হিঁকাব (হিঁ,হ্ঁ,হ্ঁ) তীনু দ্বাবা খা' ঙ্গ উদগাত দ্বাবা উদগীতক পহিনে গাওন জাগছ। ঙ্গ পাঁচ ভকিত্ত ভেন।

হাথক ক্ষদ্রা-

(খব্বরততে)

14. প্রবাসী মৈথিল English মে

খ. VN Jha কেব DO WE REALLY
EXI ST AS NATI ON



था. VI DEHA, M t hi l a, Ti r bhukt i ,
Ti r hut ...(थाँगा)

थ. VN Jha কেব DO WE REALLY
EXI ST AS NATI ON

हरि ॐ

By Vi vekanand Jha

Does India really exist as a nation ?

Raj Thackrey's North Indian bashing has unleashed the biggest intellectual debate ever: "Does India really exist" if so, - where? If Mumbai is for Maharashtrais, Delhi is for Punjabi s, Kolkata is for Bengal is and Chennai is for Madarisis, than what is left for the Indians to claim?



Nation has just ended up its commemoration of 59th of its Republic Day anniversary with a lot of hype and hoopla. After all, it is newly invented confident nation, marching ahead in this radically changed globalised world. The cause of celebration assumed even greater significance in the backdrop of a radical change in the global perception of India as a booming economy with ever increasing malls, BPOs and software revolution and on top of it all: its vast pool of English educated manpower (a doubtless cause of envy for other lesser developed world economies). The evidence of India's growing strength and recognition was adequately vindicated by the conspicuous gracing of the occasion by the French President Sarkozy. How the world perception of India being a nation of snake charmers and half-naked fakirs metamorphosed into that of a growing world power reasserting its authority to claim its rightful and legitimate place in the world affairs, within a decade or two, is itself a glowing tribute to the millions of middle-class youth who wanted to give India its long overdue place in the committee of nations? But all these much trumpeted Indian achievements aside, the biggest question that current Raj Thackeray episode has unfolded is: Which India we talk about, the India that exist buried in the history and the pages of our constitution or the India that erupts in the cricketing ground in the midst of cricketing frenzy, or in the wake of Kargil war, or India which becomes the lofty terms for the politicians to whip the nation sentiments, or the India that lay buried with the corpses of all our freedom fighters who dreamed the concept of a nation-state?



How the nation with such tremendous amount of diversity could exist for more than five decades is itself a miracle for Westerners who prophesied that a nation-state like India with multiple inherent contradictions would collapse under its own heavy weight sooner than later? But still India survives at least in the eyes of the outsiders. But where does India exist for those residing within, once again brings to the fore the most burning issue which politicians of national status prefer to avoid or at best duck: Where does India exist and who are the Indians?

The biggest irony of the whole the episode is the inscrutable and enigmatic silence of our so called nation parties – Congress and the BJP which preferred to remain incommunicado when defining India ought to have been their prerogative. Where and to whom these poor creatures of BIMARU (Cow-belt Regions) would go to seek a direct answer as to what India is and where does it exist? They further ask that gala celebration 59th of its Republic anniversary glorifying India and the Indians meant for whom?

Do these innocent people from cow-belt regions, especially from Bihar and UP, having no sources of bread and butter in their home states, need to apply for the visas and work permits for working in the metropolises from Ms Thackeray and company, if so, where does the government of India exist? If the writ of the Ms Thackeray and company overrides that of government of India's enforcement of rule of law, the immediate



question mark is raised on the status and the ability of the government to govern.

The mood conclusive point all these argument is that the concept of Indian nation-state has been hurriedly conceived to claim independence from the foreign imperialistic rule and the truth is that India never existed as a nation-state in the past, neither does it exist at present and nor will it ever exist in the future. The loosely structured concept of nationhood as that of India which at best exist in the constitution, celebration of India's victory in a cricketing ground or in the midst of Kargil frenzy and India's resultant victory, cannot co-relate with a life of day-to-day struggle for the millions of North-Indians who lead a life of virtual refugees in their own country (The sobriquet of 'Bihari denoting the inferior status is given to the toiling millions of people from North-India). Who will provide solace or reassurance to these struggling mass that India is not a product of cricketing frenzy and Kargil war drumbeats, but a day to day reality where they have every right to free movement within the sovereignty of India and no visa followed by the working permits are required from the THUGS like Thackeray and company ?

Will the answer come from the prime minister - designate of BJP Mr. Advani who, in his grand endeavor to catapult BJP to power, invented Lord Rama as a unifying factor for the nation (tragically Kurani dhi has in his recent controversial outburst dubbed Lord Rama as North-Indian God) or whether Madam (Mrs.)



Sonia Gandhi will provide answer to the millions of aggrieved North-Indians? But alas, nothing inspires our politicians more than political expediency and as such, Mr. Advani is compelled by his own coalition partner running amok and Madam (Mrs.) Sonia Gandhi remaining incommunicado because of the vote bank politics.

The crux of the whole issue boils down to this: if the nation's destiny setter remains aloof from the biggest crisis engulfing the nation – its identity crisis – who will bail the nation from its biggest predicament engulfing it? In the past, we poo-hooed Pakistan for being the most fragile nation surviving on anti-India stand, what about us Indians who survive on cricket and Kargil for our existence as a nation? At least, Pakistan has one unifying identity – Islam – but lamentably we have none. No doubt Raj Thackeray may be arrested and situation may calm down, but the Pandora Box that he has unleashed will have much wider ramifications for the future India. Raj Thackeray's North-Indian bashing has opened up an unprecedented debate – “Does India really exist”, if so, – where? If Mumbai is for Maharastrians, Delhi is for Punjabis, Kolkata is for Bengalis and Chennai is for Madarisis, than what is left for the Indians to claim?

“भारत भाग्य विधाता” जय हे, जय हे, जय जय जय हे।

Jai Hind.



शा. VI DEHA, M t h i l a, T i r b h u k t i , T i r h u t ... (शाँगा)

The accounts of Janaka Videha in the Vedic texts mention kingdoms and tribes of the northern, middle and eastern regions of India, e.g., Gandhara, Kekaya, Madra, Kuru, Panchala, Kasi and Videha. Kaushitiki Upanishad furnishes list of states that existed in the time of Gargya Balaki, a contemporary of Ajatshatru of Kasi and Janaka of Videha, the Usinaras, the Matsyas, the Kurus and the Panchalas. The Aitareya-



Brahmana, mentions types of government. Sankhayana-Srauta-Sutra says that the Kasi, Kosala and Videha kingdoms had a common Purohita, Jala Jatukarna, a contemporary of Uddalaka Aruni and Svetaketu Aruneya. So Gandhara, Kekaya, Madra, Uginara, Vatsa, Malaya, Kuru, Panchala, Kasi, Videha, Kosala and Satvat were existent. The Puran-Jataka list has the following states-Vatsa, Kuru, Panchala, Kasi, Videha, Kosala, Surasena, Magadha, Avantika, Mahishmati, Mamaka, Kalinga and Anga. The number of states occurring in the time of Janaka



Vai deha comes to eighteen. There were other states also in Janaka's time. Gandhara region was famous for learning, Uddalaka Aruni of the Kuru-Panchala toured it, it is supported by the Jatakas (journeyed to Takshasila). The Svetaketu Jataks says that son of Uddalaka called Svetaketu also travelled to to Taxila and

learned all the arts. Asvapati of Kekaya was one of the four great rulers of the time, the three others being Javali of Panchala, Ajatasatru of Kasi and Janaka of Videha. He instructed a number of Brahmanas. Madra was the home of



many famous scholars and teachers. Gargya Balaki, lived for some time in the Usinara country. Gargya Balaki lived for some time among the Vatsas also. Gargya Balaki dwelt among the Matsyas and Kuru also. The Brahmanas of the Kuru-Panchala country gathered at the sacrifice of Janaka Videha.

Ushasti Chakrayana visited the sacrificial place of a king or chief (presumably in Kuru-land where he had been living) and pointed out certain deficiencies in the sacrifice there.



The Kuru-Panchala Brahmanas took part in the intellectual contest at the court of Videha.

Ajatasatru is represented as being jealous of Janaka's fame as a patron of Brahmanical sages and learning. Kosala was fatherland of Janaka's Hotri priest Asvala.

Janaka was a real lover of learning was anxious to acquire knowledge about Brahma and besides Yajnavalkya, he learnt from (as per Brihadaranyaka Upanishad) Jitvan Salini, Udrika Saubayana, Baraku Varshna, Gardabh Bhadvaja, Satyakama Jabala and Vidagdha



Sakal ya.Vai deha i nst i t ut ed a sacrifice at whi ch many present s were to he di st ri but ed. He enclosed a thousand cows., to the horns of each ten padas (of gold) were bound.Yaj naval kya drove away the thousand cows meant for the most l earned Brahmana, was chal l enged by ot her Brahmana schol ar s, vi z., Asval a, Jat kar ana Art abhaga, Bhuj yu Lahyayani , Ushast a Chakr ayana, Kaushi t akeya, Gar gi Vachaknavi , Uddal aka Ar uni and Vi dagdha Sakal ya. Asval a was appoi nt ed the Hot ri priest of Janaka Vai deha and was the first to chal l enge Yaj naval kya ,recei ved



suitable. Ushashti Chakrayan was a very poor man and lived among the Kurus in the village of a rich man with his wife Atiki. He was not greedy. Kahoda—According to him the crop of the plants (e.g., barley and rice) offered as first-fruits at the commencement of the harvest truly belonged to those two, heaven and earth, and that it might be eaten after having been offered to the gods.

मिश्रि वडु